'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

# विनोबा-प्रवचन

( सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित )

वर्ष ३, अंक १३८ | वाराणसी, मंगलवार, १ दिसम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

व्यास-सतलज के संगम-स्थान पर — हरिके (पंजाब) १६-११-'५९

## हम विश्वामित्र की भाँति नम्र और प्रयत्नशील बनें

[ व्यास और सतलज के संगम-स्थान का जिक्र वेदों के अन्तर्गत "विश्वामित्र नदीसंवाद" में आता है। विनोबाजी ने अपने कई प्रवचनो में इसका जिक्र किया है। हरिके से डेढ़ मील दूर पर संगम-स्थान था। वहाँ एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे बैठकर विनोबाजी ने अपने सहपाठियों के साथ मौन प्रार्थना की और उसके बाद छोटा-सा भाषण दिया। ]

### सबसे पुराना स्थान

हमारी साढ़े आठ साल तक की यात्रा में हम इतने प्राचीन स्थान में कभी नहीं आये। वैसे यह पृथ्वी दो सौ करोड़ साल की है। इसलिए जहाँ भी हम कदम रखते हैं, वह प्राचीन स्थान ही होता है। लेकिन हम प्राचीन, अर्वाचीन आदि जो बोलते हैं, वह इतिहास के खयाल से बोलते हैं। आज हम जहाँ बैठे हैं, उस स्थान का जिक्र वेदों में आता है। याने यह स्थान दस हजार साल से भी पुराना होना चाहिए। वैसे काशी और कुरुक्षेत्र भी पुराने स्थान हैं। भगवद्गीता में दोनों का जिक्र आता है। उपनिषदों में भी उनका जिक्र आता है। काशी जितना पुराना नगर शायद ही दूसरा कोई होगा। वैसे मेरा मानना है, हिंदुस्तान में कुछ छोटे-छोटे देहात ऐसे हैं, जो प्राचीन काल से उसी स्थान पर हैं, परंतु वे ऐतिहासिक स्थान नहीं हैं। ऐतिहासिकता के खयाल से हमारे नक्शे में सबसे पुराना नगर काशी है। लेकिन काशी का उल्लेख वेद में नहीं आता है। वेद में जिसका स्पष्ट उल्लेख आता है, ऐसा यह (आज का) स्थान है। वैसे वेद में "रूमे, कृषमें" आदि का जिक्र आता है, उसपर से आधुनिक लोग रोम और रशिया का खयाल करते हैं। लेकिन उसमें हम निश्चित कुछ नहीं कह सकते हैं। वेद के जिस हिस्से में रूमे कृषमे का जिक्र आता है, वह तुलनात्मक दृष्टि से अर्वाचीन माना जाता है।

### वेद में क्या है ?

चार वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। उसमें सूक्त याने भगवान की स्तुति के मंत्र हैं। वेद में भगवान की स्तुति के सिवा कोई खास विषय नहीं है। जैसे ओल्ड टेस्टामेन्ट में पाम्स आते हैं, जो भगवान के स्तोत्र हैं। भगवान की स्तुति के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं, ऐसा माना जाता है। शायद वेद दुनिया का सबसे पहला ग्रंथ होगा। ऋग्वेद में १०२८ सूक्त हैं, जो दस मंडलों में बँटे हैं। संशोधकों का खयाल है—जो मुझे भी जँचता है—कि उसमें से दो, तीन, चार और पाँच मंडल शायद सबसे पुराने मंडल हों। छह, सात मंडल भी पुराने हैं, लेकिन उतने नहीं। एक, आठ, नौ और दस—ये चार मंडल उस हिसाब से जरा अर्वाचीन हैं।

ऋग्वेद जो कि सबसे प्राचीन ग्रंथ है, उसके सबसे प्राचीन विभाग में याने तीसरे मंडल में तैंतीसवा सूक्त है, जिसका नाम है "विश्वामित्र नदीसंवादः।" उसमें विश्वामित्र बात कर रहे हैं और नदी उसका जवाब दे रही है। काव्य के खयाल से वह अद्भुत ही रसमय काव्य है। उसमें आज के इस स्थान का जिक्र है। इतने प्राचीन काल का इतना स्पष्ट निर्देश दूसरा नहीं मिलता है।

### एक भूला हुआ पवित्र स्थान

जबसे मैंने ऋग्वेद पढ़ा, तबसे ही हम व्यास और सतलज के संगमस्थान को जानते थे। हिन्दुस्तान के लोगों को इस स्थान के बारे में मालूम नहीं है। वे तो पंजाब के स्थानों में कुरुक्षेत्र ही जानते हैं और अर्वाचीन स्थानों मे अमृतसर वगैरह को। कुरुक्षेत्र में ग्रहण के मौके पर मेले लगते हैं। हिंदुस्तान को कुरुक्षेत्र की सबसे बड़ी देन भगवद्गीता है, जो वहाँपर कही गयी थी। गीता से बढ़कर चीज हिन्दुस्तान में नहीं निकली। वह आज तक असंख्य लोगों को प्रेरणा देती है। जिसपर ऐसे महापुरुषों ने भाष्य लिखे हैं जो कि हिन्दुस्तान के सबसे श्रेष्ठ पुरुष थे। वह गौरव कुरुक्षेत्र को हासिल है; क्योंकि गीता की घटना वहाँ बनी। लेकिन वह सबसे प्राचीन घटना नहीं है। गीता में कहा है "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" याने गीता से भी बहुत पहले कुरुक्षेत्र था, जो लोकमान्य था। कुरुक्षेत्र का उल्लेख वेद में नहीं आता है, इसलिए आज का स्थान उससे भी प्राचीन है। लेकिन पंजाब के लोग भी इसे नहीं जानते हैं। जब मैंने पूछा कि क्या यहाँ कोई मेला लगता है तो कहा गया कि वैशाखी पूर्णिमा को मामूली मेला लगता है, जो अक्सर हर संगमस्थान पर लगता है। वह कोई विश्वामित्र का स्मरण करके नहीं लगता है। विश्वामित्र यहाँ आये थे, जिसका जिक्र वेद में आता है। लेकिन सिवा वेद पढ़नेवालों के और किसी को इसका खयाल नहीं है कि हमारी संस्कृति की दृष्टि से यह एक पवित्र स्थान है। वैसे हमें तो इस स्थान का सारा दर्शन अपने अन्दर ही होता है। बाहर स्थूल दुनिया दीखती है। दर्शन कुल का कुल अन्दर होता है, लेकिन फिर भी हमें इधर से जाना ही था, इसलिए हमारी खास इच्छा से आज के इस स्थान पर पड़ाव रखा गया। इस तरह सहज भाव से यहाँ आना हुआ।

वेद में "विश्वामित्र नदीसंवाद" में कहा है कि विश्वामित्र

www.vinoba.in

यहाँपर नदी के किनारे आये थे। वे देहली की तरफ से आकर आज के पाकिस्तान की तरफ जा रहे थे या उधर से आकर देहली की तरफ जा रहे थे, इसका ठीक खयाल नहीं आता है। लेकिन मेरा अन्दाज है कि दक्षिण से आ रहे थे और नदी पार करके आज के पाकिस्तान की दिशा में जा रहे थे।

## दो बेजोड़ मिसालें

सूक्त में स्तुति से आरंभ होता है "पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने। गावेवे शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्-छुतुद्री पयसा जवेते।" ये मेरी दो माताएँ पर्वतों की गोदी में से निकलकर बहुत प्यार से दौड़ रही हैं। वैसे पर्वत तो यहाँसे काफी दूर हैं, लेकिन उसे भान हो रहा है कि ये नदियाँ पर्वत की गोदी में से निकली हैं। आज यह भान नहीं होता है। इसका मतलब यह है कि उस जमाने में नदी जोरों से बहती होगी। वैसे इस जमाने में नहरों के कारण नदी का वह रूप नहीं रहा। मुमकिन है कि बारिश के कारण उस वक्त नदी में जोशीला पानी आया हो। इसीलिए उसे पर्वत का स्मरण होता है। उसके बाद कहा है कि जैसे दो वत्सल, दो माताएँ या दो उम्दा घोड़ियाँ चिल्लाती हुई, उछलती, कूदती हुई, प्यार से अपने बछड़े से मिलने जा रही हों, ऐसे ही ये दो नदियाँ जा रही हैं। इसमें दौड़ने की रफ्तार बताने के लिए घोड़ी को याद किया और वात्सल्यभाव बताने के लिए गोमाता को याद किया। नदी को हमेशा गाय की उपमा दी जाती है। इस तरह नदी की स्तुति करके विश्वामित्र प्रार्थना करते हैं, जो अद्‌भुत है। "रमध्वं मे वचसे सौम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः" मेरी सौम्य, मधुर, नम्र वाणी सुनकर तुम जरा रुक जाओ या शांत हो जाओ। तुम सत्य की तरफ दौड़ी जा रही हो, सत्यगामिनी हो, सत्य की खोज कर रही हो। वह तुम्हारी सत्य की खोज जारी रहेगी। लेकिन मेरी नम्र वाणी सुनकर एक मुहूर्त के लिए शांत हो जाओ। मुहूर्त के मानी हैं ४८ मिनट। इसपर नदी कहती है, "इन्द्रो अस्मां अरदद् वज्रबाहुरपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् देवोनयत् सविता सुपाधिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः" हम तो भगवान की आज्ञा से बहती हैं। जब तक भगवान दूसरी आज्ञा न दे, हमें बहते ही जाना है। निसर्ग ने हमें जो प्रेरणा दी है, वह कभी नहीं रुक सकती है। किस इच्छा से यह विप्र हमसे बात कर रहा है। "नवर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नघो जोहवीति"। फिर विश्वामित्र कहता है "ओषु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन। निषु नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः।" मैं भारतीयों को लेकर जा रहा हूँ, इसलिए तुम जरा झुक जाओ। पहले उसने "रमध्वं" याने रुको कहा था। अब वह 'नमध्वं' याने झुको कहता है। हे नदी, तुम झुक जाओ और मेरे लिए सुपारा बनो। तुम्हारा जो प्रवाह बह रहा है, वह भले ही बहने दो। लेकिन मेरी गाड़ी के अक्ष के नीचे तक झुक जाओ तो मेरी गाड़ी चली जायगी। विश्वामित्र आगे कहता है कि मैं कौशिक गोत्र का हूँ। मेरा नाम विश्वामित्र है। (मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि मैं भी कौशिक गोत्र का हूँ। बचपन में हम बोलते थे, "कौशिकगोत्रोत्पन्नः अहम्...कुशिकस्य सूनुः") फिर नदियाँ बोल रही हैं कि इन्द्र ने हमको जन्म दिया और सविता देव की प्रेरणा से हम दौड़ी जा रही हैं। "इन्द्रो अस्मां अरदद् वज्रबाहुरपाहनः वृत्रं परिधिं नदीनाम्।" विश्वामित्र कहता है कि इन्द्र ने तुमको जन्म दिया, इसलिए हम इन्द्र के बड़े उपकृत हैं। हम भगवान इन्द्र की स्तुति निरन्तर गायेंगे कि उसने तुम्हें दौड़ने की आज्ञा दी। देवताओं, मैं बहुत दूर से ये गाड़ियाँ लेकर आया हूँ। नदियाँ कहती हैं "नितेनंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते।" जैसे परिपुष्ट माता अपने बच्चे को उठाने के लिए झुक जाती है, वैसे हे ऋषि, मैं तेरे लिए झुक रही हूँ। यह एक मिसाल देकर नदी ने फिर कहा कि "जैसे कन्या पिता की सेवा के लिए झुक जाती है, वैसे ही मैं तेरी सेवा के लिए झुक रही हूँ। हे भक्त, तेरा वाक्य हमने सुन लिया है और हम समझ गयी हैं कि तुम बहुत दूर से आये हो, इसलिए हम तेरे लिए झुक जाती हैं।" आतेकारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।" फिर नदी झुक गयी और वे सारे भारतीय तर गये। ऐसा इस सूक्त में कहा है।

यहाँपर जो दो मिसालें दी गयी हैं, वे परम रमणीय हैं। अत्यन्त स्वाभाविक तौर पर हम नदी को माता कहते हैं, कन्या नहीं कहते और विश्वामित्र ने भी पहले नदी को माँ कहा था। नदी ने भी पहले वही बात कही थी। इतने में उसे याद आया कि यह तो एक महान ज्ञानी ऋषि है, जिसके पास चैतन्यमय ज्ञान पड़ा है। हम तो उसकी कन्याएँ हैं और वह हमारा पिता है। ये जो दो मिसालें दी गयी हैं, उनपर मैं कभी-कभी सोचता हूँ तो यह भी लगता है कि मुमकिन है कि इसमें जो सबसे बड़ी नदी सतलज है, वह अपने को माता और विश्वामित्र को पुत्र कहती होगी और छोटी व्यास अपने को कन्या और उसे पिता समझती होगी। लेकिन मुख्य बात यह है कि उन्होंने अत्यन्त प्रेम दिखाया और उसके बाद परम आदर दिखाया। माता को बच्चे के लिए प्रेम, स्नेह, वात्सल्य होता है और कन्या को पिता के लिए आदर होता है। वात्सल्यभाव से और आदरपूर्वक हम तेरे लिए झुक रही हैं, ऐसा कहकर नदी झुक जाती है। फिर सब भारतीयों को लेकर विश्वामित्र नदी तर गये। उन्हें नदी की सद्‌बुद्धि, कृपा और आशीर्वाद हासिल हुआ। उन्होंने नदियों से कहा कि अब मेरा काम हो गया है। इसलिए अब तुम फिरसे भर जाओ और शीघ्र दौड़ी जाओ। ऐसी कहानी है। अब इस प्रकार मानव की सृष्टि पर कोई सत्ता चल सकती है, यह तो हम विज्ञान के खयाल से नहीं मान सकते हैं। फिर भी हमारे यहाँ रिवाज है कि कहीं नदी तरने का मौका आये तो यह नदीसूक्त बोला जाता है।

## नदी पार करने के उपाय

ये तो मामूली नदियाँ हैं। लेकिन संसारनदी, मायानदी बहुत जोरों से बह रही है और हमें उस नदी के उस पार जाना मुश्किल मालूम हो रहा है। भवनदी पार करने के लिए अगर विश्वामित्र के समान नम्र और प्रयत्नशील बन जायँ तो हम भी संसारनदी पार कर सकते हैं, ऐसी श्रद्धा इस "विश्वामित्र नदी-संवाद" से मुझे मिलती है।

यह बहुत एकान्त स्थान है। हमारे पवित्र स्मरणों में इस स्थान और प्रसंग का हमें स्मरण रहेगा। (इसके बाद विनोबाजी ने सूक्त का पाठ किया और फिर कहा।)

कुछ मन्त्रों की देवता नदी है और ऋषि विश्वामित्र है तो कुछ मन्त्रों का ऋषि नदी और देवता विश्वामित्र है। ऋषि याने बोलनेवाला। पहले सूक्त त्रिष्टुप छन्द में और आखिरी एक नुष्टुप छन्द में है। ●●●

www.vinoba.in

प्रभात-प्रवचन

अमृतसर (पंजाब) १७-११-'५९

# हम समाज-सेवा को रूहानी रूप देना चाहते हैं

दो-ढाई साल के चिंतन से हमने अज्ञात-संचार का विचार निश्चित किया। उसके बाद पुराने कार्यक्रम को तोड़ने के लिए हमने एक दिन का कार्यक्रम छोड़कर अगले पड़ाव पर जाने का तय किया। एक तरह से हमने लोगों को धोखा दिया और लोग धोखा खा भी गये। लेकिन वह तोड़ना अनिवार्य था। अभी जो दो-तीन दिन का कार्यक्रम बनता है, उसे भी मैं तोड़ सकता हूँ। मैंने कहा था कि कमांडर कोई अपना दो-तीन महीने का प्रोग्राम जाहिर नहीं करता। उसे मालूम हो जाय कि आज दूसरी दिशा लेनी पड़ेगी तो वह लेता है। कमांडर की यह आजादी मैं अपने लिए रखना चाहता हूँ। हमारे जो भी दिन यहाँ जायँ, उनका आध्यात्मिक और बाह्य दृष्टि से पूरा लाभ लेना चाहिए। आध्यात्मिक और बाह्य दृष्टियाँ एक-दूसरे के प्रतिबिम्ब ही हैं।

## मैं रास्ता ढूँढ़ रहा हूँ

मुझे खुद को मालूम नहीं कि मैं क्या-क्या करूँगा। मैं एक रास्ता ढूँढ़ रहा हूँ। स्थानिक लोगों से मिलकर मैं अपना कार्यक्रम बनाता जाऊँगा। मैंने लिखा था कि इन्दौर की तरफ मेरी निगाह है। उसमें एक दृष्टि है। डेढ़ साल पहले मैंने जाहिर किया था कि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। उसके बाद कोई नाम मेरे मन में नहीं है। उसके बाद हिंदुस्तान में इधर-उधर कहीं भी मैं घूम सकता हूँ और हिन्दुस्तान के बाहर भी जा सकता हूँ। अभी इंदौर की तरफ हमारी दृष्टि है। लेकिन मैं पृथ्वी प्रदक्षिणा करके इंदौर पहुँचूँगा या यूक्लीड की स्टेट लाइन से पहुँचूँगा, यह स्थानिक लोगों के पुरुषार्थ पर निर्भर है।

## सत्य की सामूहिक खोज

मेरी दृष्टि मुख्यतया आध्यात्मिक है। १९१६ में मैं "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" को लेकर घर छोड़कर निकला था। वह मेरी भावना अब शांत हुई है। अब व्यक्तिगत तौर पर वह बात नहीं करनी है। बल्कि समुदाय के तौर पर सत्य की खोज करनी है। सत्य की खोज के लिए ही हमने घर और कालेज छोड़ा। उसी की खोज के लिए गुरुजनों का आश्रय लिया था। उसीकी खोज के लिए ग्रंथों का अध्ययन किया था। उसीकी खोज के लिए आश्रम छोड़कर मैं निकला था और सब संस्थाओं को भी छोड़ा था। अब उसीकी खोज के लिए अज्ञातवास ले रहा हूँ। खोज वही है। सब मिलकर काम करें, ऐसी अभी चाह है। क्योंकि पुरानी वृत्ति शांत हुई है। मन में यह उलझन नहीं रही है कि हमें कोई चीज प्राप्त करनी है। एक मानसिक निश्चय अन्दर पड़ा है। मैं मानता हूँ कि यह स्थितप्रज्ञ का लक्षण नहीं है। वह तो दूर है, लेकिन जिसे गीता "व्यवसायात्मिका बुद्धिः" कहती है, वैसी यह है। बुद्धि का निश्चय हुआ है। समत्व आ गया है। उसपर बाहर की हवा के झोंकों का कोई असर नहीं हो सकता है। हमने कहा था कि चाहे भगवान उसे तोड़े तो तोड़े, लेकिन दुनिया की ताकत उसे नहीं तोड़ सकती। बुद्धि की परिनिष्ठित अवस्था तो आ गयी। अब स्थितप्रज्ञता जब आयेगी, तब आयेगी। लेकिन एक सुनिश्चित दिशा सामने है कि हमें सत्य की सामूहिक खोज करनी है।

ज्ञानदेव ने कहा है 'अवघा डोला तुज म्यां पाहावे" हे भगवान, मैं सबके नेत्रों से तुझे देखूँ। "अवघा श्रवणी तुज ऐकावे" हे भगवान, सबके कानों से तुझे सुनूँ। "अवघी मूर्ति तुज देखावे" हे भगवान, दुनिया में जितनी मूर्तियाँ खड़ी हैं, उन सब में मैं तुझे देखूँ। अवघा चरणी तुझा पंथ चालावे" सबके पाँवों से तेरी यात्रा चलूँ। अपने पाँवों से तो चलता ही हूँ, लेकिन सबके चरणों से चलूँ, यह जो भावना उसमें व्यक्त हुई है, वह अभी मुझमें काम कर रही है। इसलिए अब मुझे व्यक्तिगत खोज नहीं करनी है। बंगाल में, विष्णुपुर में जहाँ रामकृष्ण परमहंस की जिस तालाब के किनारे प्रथम समाधि लगी थी, वहींपर भूदान-यात्रा के सिलसिले में जब मैं गया था तो सुबह के वक्त कुछ ध्यान करके मैंने वहाँ जाहिर किया था कि रामकृष्ण की समाधि यहाँ लगी, यह हमने बचपन में पढ़ा था। उनका मुझे बहुत आकर्षण था। उनका साहित्य पढ़ने के लिए ही मैंने बंगला का अध्ययन किया। हमारा उद्देश्य है सामूहिक समाधि। इसीके लिए हम कोशिश करेंगे।

## दुर्जनता फैली तो न इन्सान रहेगा, न इन्सानियत

यह ठीक है कि पहले व्यक्तिगत प्रयोग होते हैं। जैसे विज्ञान की प्रयोगशाला में प्रयोग होते हैं और फिर व्यापक पैमाने पर उन्हें लागू किया जाता है। लेकिन अब जमाना आया है कि हमें समूहरूपेण एक दर्शन प्राप्त करना चाहिए और वह हो सकता है, ऐसी आज हालत है। पुराने जमाने में वैसी हालत नहीं थी। लेकिन विज्ञान के कारण अब मानव में एक समूह की विवेक-बुद्धि सामूहिक कान्शन्स पैदा हुआ है। दो सौ साल पहले इंगलैंड से कुछ लोग यहाँ आये और उन्होंने भारत जैसे इतने बड़े देश को अपने कब्जे में कर लिया। उस वक्त बर्क जैसे की थोड़ी आवाज उठी, लेकिन और कोई आवाज नहीं उठी। वारेन हेस्टिंग्ज, क्लाइव वगैरह ने यहाँपर जो कारनामे किये, उनपर बर्क ने आक्षेप किये। लेकिन वे कारनामे नहीं किये जाते तो मूलतः यह आक्षेप नहीं उठाया जाता कि इस तरह हिन्दुस्तान पर कब्जा करना ही एक बड़ा अन्याय है। वही एक पाप है। यह आवाज उस वक्त नहीं उठी। लेकिन अब इस जमाने में इंगलैंड ने ईजिप्त पर आक्रमण किया तो कुल दुनिया में प्रक्षोभ हुआ, इंगलैंड में भी हुआ। फिर इंगलैंड को वह कदम वापस लेना पड़ा। यह एक राजनैतिक क्षेत्र की मिसाल है। लेकिन उससे पता चलता है कि दुनिया का एक कान्शन्स बना है। दुनिया में एक सहानुभूति का वातावरण है। मैंने कभी विदेशों में जाकर प्रचार नहीं किया और न बापू के जैसे अंग्रेजी में लेख लिखे, हिन्दी में भी कुछ नहीं लिखा। लेकिन फिर भी इस काम के लिए दुनियाभर में सहानुभूति पैदा हुई और हिन्दुस्तान में कोई विशेष काम चल रहा है, ऐसा दुनिया मानती है। दुनिया के काफी लोगों ने इस काम को देखा, उसपर लेख, ग्रंथ वगैरह लिखे। यह सब दिखाता है कि दुनिया में अब सज्जनता एकाकी नहीं रहेगी। सज्जनता समूहरूपेण प्रकट होने के दिन आये हैं। दुर्जनता समूहरूपेण प्रकट होती ही है। लेकिन अब तक सज्जनता व्यक्तिगत रूपेण प्रकट हुई थी। क्योंकि व्यक्तिगत मार्ग कठिन था। इसलिए वह रास्ता बनाने में एक-एक व्यक्ति को आगे बढ़ाना पड़ा। लेकिन अब जमाना आया है, जब कि दुर्जनता का प्रगट होना मुश्किल है। एक जमाने में दुर्जनता की चलती थी। क्योंकि शस्त्रों से काम होता था! अब भी उधर अयूबखान आया है तो उसने कुछ काम किया है। लेकिन अब अणुयुग आया है, इसलिए दुर्जनता का फैलना मुश्किल है। और दुर्जनता फैलती है तो न

www.vinoba.in

इन्सान रहेगा और न इन्सानियत। दुर्जनता के लिए पहले इन्सान को कायम रखकर कुछ ऊधम मचाना संभव था, लेकिन अब नहीं है। यद्यपि आज भी दुर्जनता का इधर-उधर, गाँव में कुछ फैलाव होता है, क्योंकि विज्ञान अभी उतना फैला नहीं है। यह संधिकाल है, इसलिए थोड़ी देर दुर्जनता का जोर चलेगा। लेकिन आगे के जमाने में सज्जनता का फैलना आसान होगा। इसलिए जिसके जीवन में सज्जनता होगी, उसकी वाणी में जोर आयेगा।

## कश्मीर-दर्शन

भगवान बुद्ध के जमाने में उनकी हत्या करने के लिए उन्हीं-का एक रिश्तेदार खड़ा हुआ। ईसामसीह को सूली पर चढ़ाया गया। सॉक्रेटिस को जहर पिलाया गया। गांधीजी को कत्ल किया गया, यह भी पुराने जमाने की बात है। इसपर आप कहेंगे कि अभी भंडारनायक को कत्ल किया गया, लेकिन वह दूसरी मिसाल है, सियासत की मिसाल है। सियासत में गिरफ्तार लोगों की बात अलग है। सियासत भलाई के साथ-साथ काफी बुराई करती है। गांधीजी का कुल जीवन आध्यात्मिक था। लेकिन फिर भी उन्हें काफी भुगतना पड़ा; क्योंकि उनके साथ जो मालगाड़ी के डब्बे लगे हुए थे, उनमें तरह-तरह का माल पड़ा था। उस सब माल को उन्होंने नहीं ढोया होता तो दूसरी बात थी। लेकिन अब रूहानियत की अपील को ग्रहण करने के लिए दुनिया तैयार है। इसका दर्शन मेरी आँखों को कश्मीर में हुआ। वैसे मानसिक दर्शन तो पहले से ही था। लेकिन आँख से दर्शन कश्मीर में हुआ। मैं नहीं मानता कि कश्मीर में मुझे जो पूरा दर्शन हुआ और हरएक के साथ दिल खोलकर बातें हुईं, वैसा और किसीको हो सकता था, जो सियासत में गिरफ्तार हैं। लोगों ने हमसे यही कहा कि और किसीके सामने हमारा दिल आज तक नहीं खुला। मैं तो कश्मीर में बहुत डरते-डरते गया था, फूँक-फूँककर कदम रख रहा था। मुझे विश्वास नहीं था कि कश्मीर की परिस्थिति में मैं क्या कर सकता हूँ। लेकिन वहाँ जाने पर मेरे सामने सारा चित्र खुल गया और कश्मीर-वैली में प्रवेश करते ही मैंने इतनी खुलकर बातें कीं कि मेरे कुछ हिन्दूमित्रों को डर मालूम हुआ। मैंने वहाँ कहा कि हम ग्रंथों का बोझ नहीं उठायेंगे। मजहब और रूहानियत अलग-अलग है। रूहानियत शाश्वत है, मजहब शाश्वत नहीं है। सब धर्मों में लेने लायक कुछ बातें हैं। इस तरह की बातें सुनने की वहाँके लोगों को आदत नहीं थी, इसी-लिए हमारे कुछ हिन्दूमित्र डरते थे और कहते थे कि आप दुबारा ऐसी बातें मत बोलिये। लेकिन मैं तो वहाँ साफ ही बोलता गया। श्रीनगर की बड़ी सभा में और छोटे गाँवों की सभा में भी मैंने ये बातें कहीं। लेकिन इसका भी वहाँपर कोई गलत असर नहीं हुआ। यह किस कारण से हुआ? इसके मानी यह है कि सुनाने-वाला ठीक हो, पूर्वग्रहदूषित न हो तो लोग ऐसी बातें सुनने के लिए राजी हो जाते हैं।

## रूहानियत का निष्क्रियता के साथ जोड़ न रहे

मैं जानता हूँ कि इसके आगे रूहानियत के स्वीकार के लिए, सामूहिक समाधि के लिए, असामूहिक ब्रह्मजिज्ञासा के लिए लोकमानस तैयार है। इसलिए अब हमारे लिए बिलकुल स्टीयर क्लीयर हो गया है। बाकी के झमेले टालकर हम सीधे आगे बढ़ेंगे तो हमारे कार्यकर्ताओं की ताकत खूब बढ़ेगी। मैं चाहता हूँ कि हम गहराई में जायँ। एक-दूसरे को भगवान के भक्त के तौर पर समझें, अपनी हर कृति का संबंध भगवान के साथ जोड़ें। यह एक प्रत्यक्ष वस्तु है। जैसे आप अपने किसी भाई से चार साल नहीं मिले और फिर मिले तो साक्षात दर्शन, रूबरू दर्शन होता है और उसका शरीर, मन, वाणी पर परिणाम होता है। माता अपने बिछुड़े हुए बच्चे से मिलती है तो उसका उसपर परिणाम होता है। वैसे ही हम सीधे परमेश्वर के साथ सबंध जोड़ सकते हैं। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। हमारे कार्य-कर्ता इसे पहचानें तो उनमें शक्ति आयेगी। हमारे कार्यकर्ता निष्क्रिय नहीं हैं। हिन्दुस्तान में रूहानियत का निष्क्रियता के साथ जोड़ हुआ है, जो एक अपूर्ण दर्शन है, अर्ध सत्य है। हम समझते हैं कि इस पार की चीज उस पार लाने में उसका रूप भी बदलता है, यह गलत विचार है।

मैंने कहा था कि जैसे पश्चिमवालों के पास घर बैठे दुनिया को खत्म करने का शस्त्र आया है, वैसे ही घर बैठे दुनिया पर असर डालनेवाली आध्यात्मिक शक्ति हमें हासिल करनी होगी। इसपर कुछ लोग पूछते हैं कि क्या यह आध्यात्मिक शक्ति ध्यान से प्राप्त हो सकती है? क्या यह शक्ति प्रेषण के जैसी है? मैंने कहा कि वैसी नहीं है। जैसे कर्म एक शक्ति है, वैसे ध्यान भी एक शक्ति है, जो नॉनमॉरल है। उसका उपयोग भले काम में भी हो सकता है और बुरे काम में भी। ध्यान अपने में ही रूहानियत नहीं है। ध्यान का उपयोग रूहानियत के लिए भी हो सकता है और मामूली सामाजिक काम के लिए भी हो सकता है। इसलिए कोई ध्यान करे तो रूहानियत हो गयी, यह मानना गलत है।

## हम स्थूल जीवन को भी हाथ में लें

हमारे कार्यकर्ता सक्रिय हैं ही। दुनिया के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार होना चाहिए, यह भी जानते हैं। इसके साथ-साथ उनके दिमाग में यह स्पष्ट हो जाय कि अपनी हर कृति को भगवान के साथ जोड़ना है तो फिर वह शक्ति पैदा होगी, जो हम चाहते हैं। सक्रिय समाज-सेवा को हम रूहानी रूप देना चाहते हैं और वह सारी सेवा भगवान के साथ जोड़ना चाहते हैं, भगवदर्पण करना चाहते हैं। इसका थोड़ा-सा आरंभ भक्तों ने किया था। लेकिन उन्होंने समाज-सेवा के स्थूल रूप को नहीं अपनाया। क्योंकि उस जमाने में समाज-सेवा की उतनी सहूलियत नहीं थी। इसलिए वे भाव-प्रदर्शन करके शांत रहते थे। अब हमें स्थूल जीवन को हाथ में लेना पड़ता है और उसका रूप कैसा हो, यह भी बताना पड़ता है।

अब उसके साथ नया विचार जोड़ना होगा कि इहलोक की प्रगति के लिए समूहरूपेण साधना जरूरी है। मैं चाहता हूँ कि हमारे कार्यकर्ताओं का ध्यान इस तरह खिंचे। हम जो चंद भाई हैं, वे इस गहराई में पहुँच जायँ और ताकत महसूस करें। मैं तो इसे बिजली की ताकत के जैसा महसूस कर रहा हूँ। और मैं जानता हूँ कि यह ताकत हमारे जीवन में और वाणी में संचार कर रही है। हमारे सब कार्यकर्ता यही महसूस करें, यह मैं चाहता हूँ। मेरे अज्ञातचार का यही उद्देश्य है। ● ● ●

## अनुक्रम

१. हम विश्वामित्र की भाँति नम्र और प्रयत्नशील बनें

हरिके १६ नवंबर '५९ पृष्ठ ७९९

२. हम समाज-सेवा को रूहानी रूप देना चाहते हैं

अमृतसर १७ नवंबर '५९ „ ८०१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।
www.vinoba.in